## 15 दिवसीय संतरा महोत्सव का भव्य, ऐतिहासिक एवं सफल समापन

**नवभारत न्यूज़**

**पिपलानारायणवार 26 फरवरी.** 15 दिवसीय संतरा महोत्सव का समापन बुधवार को घोघरा में प्रगतिशील किसानों का सम्मान कर कार्यक्रम का समापन किया गया। प्रमोटर अजय भाऊ चौरे के नेतृत्व में आयोजित इस महोत्सव में प्रदेशभर से बड़ी संख्या में किसानों की सहभागिता रही। महोत्सव का मुख्य उद्देश्य किसानों को उन्नत खेती, आधुनिक कृषि तकनीक, विपणन व्यवस्था तथा अपनी उपज को सीधे बाजार तक पहुँचाकर बिचौलियों से मुक्त होकर उचित मूल्य प्राप्त करने के प्रति जागरूक करना रहा। इस अवसर पर किसानों को यह मार्गदर्शन दिया गया कि वे तकनीकी ज्ञान अपनाकर खेती को लाभ का साधन बना सकते हैं। श्री चौरे के सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप जिला पांढुरना में संतरा फसल को ODOP (One District One Product) के रूप में पहचान

मिली, जिससे क्षेत्र के किसानों को नई आर्थिक दिशा प्राप्त हुई। साथ ही, किसानों के हित में मेरा गाँव – मेरा बाजार नामक स्थायी हाट की स्थापना भी की गई, जिससे किसानों को अपने ही क्षेत्र में बाजार उपलब्ध हो सके और दूर-दराज़ की मंडियों में जाने का अतिरिक्त खर्च न उठाना पड़े। समारोह में ऑरेंज फेस्टिवल के आयोजक श्री चौरे उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि के रूप में श्री नरेंद्र साहू पधारे। विशिष्ट अतिथियों में रामराव महाले, कृष्णकांत ढोबले, राव साहेब (राजना), भूषण केवटे एवं धीरज चौधरी शामिल रहे। किसान सम्मान समारोह में 12 एवं 24 संतरे के पैकिंग का विधिवत शुभारंभ किया गया। एवं SFPO के उत्पादों का भी लोकार्पण संपन्न हुआ।

कार्यक्रम के दौरान शाम 4 बजे किसान सम्मान समारोह आयोजित किया गया, जिसमें स्वर्गीय रेवनाथ चौरे (पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश शासन) जी के स्मृति में कृषि रत्न पुरस्कार से राजकुमार कालबांडे एवं श्री पवार को सम्मानित किया गया। समापन समारोह में बलवंतराव फोले, नरेंद्र फोले, रविंद्र चौरे, सोनेलाल बंड, भुवनेश्वर बोबडे, भीमराव ठाकरे, योगीलाल करमारे, मनोहर मोहोड़, विलास राऊत, केशवराव इंगोले एवं शेषराव राऊत सहित किसानों, अतिथियों एवं ग्रामीणजनों की बड़ी संख्या में सहभागिता रही। शाम 7 बजे से आयोजित प्रदेश स्तरीय भव्य आदिवासी लोककला कार्यक्रम ने समापन समारोह को विशिष्ट सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश की समृद्ध आदिवासी परंपराओं का मनोहारी प्रदर्शन लोकनृत्य, लोकगीत, ढोल-मांदल एवं अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों के माध्यम से किया गया। प्रस्तुतियों के माध्यम से आदिवासी जीवन-शैली, प्रकृति से गहरा जुड़ाव एवं सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रूप में प्रदर्शित किया गया। कलाकारों की रंग-बिरंगी पारंपरिक वेशभूषा, सशक्त नृत्य मुद्राएं एवं सामूहिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

उक्त सांस्कृतिक संध्या में मुख्य अतिथि के रूप में संजय राठी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विशेष रूप से सतीश बोडखे, नरेंद्र परमार, डॉ. गुलाबराव पांडे, डॉ. राऊत, मधुकर गायकवाड, राहुल रंगारे, राजू वाडीवा, अनवर खान, संजय इंगोले एवं यदोराव ढोबले सहित अनेक गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही।इसके अतिरिक्त रमेश माधव लाल दुबे, खुशाल चौधरी, दीपक कामड़े, संदीप रघुवंशी, आशीष ठाकरे, संजय पराडकर, चंद्रशेखर अंबेडकर, बंडू बेंडे, अशोक ठाकरे, डॉ. रमेश हाते, सहित आदी की गरिमामयी उपस्थिति में यह भव्य समापन समारोह अत्यंत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

## महाबोधि महाविहार मुक्ति आंदोलन

**नवभारत न्यूज़**

**सौंसर 26 फरवरी.** विश्व के समस्त बौद्ध बंधुओं का पावन स्थल तथागत बुद्ध की बुद्धत्व प्राप्त स्थली बुद्धगया स्थित महाबोधि महाविहार मुक्ति आंदोलन के तहत भारतीय बौद्ध महासभा राष्ट्रीय कार्यकारिणी ट्रस्टी चेयरमैन डॉ चंद्रबोधि पाटिल के निर्देश पर संपूर्ण देश में 10 मार्च को एकदिवसीय धरना आयोजित किया गया है। इसी कड़ी में बुद्ध विहार सौंसर में भारतीय बौद्ध महासभा के जिलाध्यक्ष नरेंद्र पाटिल, समता सैनिक दल जिला जीओसी बाबाराव चारे की प्रमुख मौजूदगी व भारतीय बौद्ध महासभा तथा समस्त बौद्ध आंबेडकरी संगठनों, बुद्धिजीवियों की उपस्थिति में गुरुवार को बैठक आयोजित की गई। बैठक में धरना करने को लेकर उपस्थित सभी समाज बंधुओ के द्वारा विचार सुझाव रखते हुए सर्वसम्मति से तहसील कार्यालय के सामने 10 मार्च को सुबह 11 से दोपहर 4 बजे धरना महामहिम राष्ट्रपति एवं बिहार राज्यपाल के नाम बी टी एक्ट रद्द करने एव महाबोधि महाविहार बौद्धों को सौपा जाये इसको लेकर ज्ञापन सौंपा जाएगा। बैठक में भारतीय बौद्ध महासभा के जिला महासचिव अशोक डोंगरे, उपाध्यक्ष अरविंद हनवते, जिला पदाधिकारी कैलाश कोचे, राजू ठवरे, रामकृष्ण गजभिए, एम आर शेंडे, तहसील अध्यक्ष प्रवीण ठवरे, उपाध्यक्ष प्रशांत डोंगरे, दिलीप नागदवने,जी एम दुफारे,आर वाहने, एसके बन्सोड,विनायक पाटील, देवेन्द्र बागडे,बंडू पाटिल,मनोहर डहाट,अरुण बागडे, सुधीर शेन्डे, दादाराम डोंगरे, विलास गोडबोले, भीमराव शेंडे आदि मौजूद थे।

## ग्राम बोरगांव में महुआ शराब बनाने तथा बेचने पर सख्ती से पाबंदी लगाने ग्रामीणों ने कलेक्टर से लगाई गुहार

**ग्रामीणों ने कलेक्टर को बताया महुआ शराब पीने से ग्राम में बढ रहीं घरेलू हिंसा**

**नवभारत न्यूज,**

**पांढुरना,26 फरवरी**,ग्राम बोरगांव में कई लोगों द्वारा कच्ची महुआ शराब बनाने के साथ ही इसकी खुलेआम बिक्री करते है,जिससे ग्राम के युवा, बुजुर्गों के साथ ही छोटे-छोटे बच्चे भी शराब पीने के आदि होते जा रहे है,वहीं शराब पीने के बाद यह आपस में वाद विवाद तथा मारपीट करते है,जिससे ग्राम में घरेलू हिंसा भी बढ़ने लगी है,ग्राम में अवैध रूप से बनाई जा रहीं महुआ शराब तथा इसकी बिक्री पर सख्ती से पाबंदी लगाते हुए इन लोगों को सख्त कार्यवाही करने के मांग को लेकर गुरूवार को ग्राम की सैकड़ों महिलाओं ने जिला कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर ज्ञापन सौंपा। नगरीय सीमा से लगे ग्राम बोरगांव की सैकड़ों जागरूक महिलाओं ने गुरूवार को पांढुरना नगर जिला मुख्यालय के कलेक्टर कार्यालय पहुंचकर बताया कि ग्राम रहने वाले सागर चिचाम, प्रियंका,लेख राम,चरण ,रामू ,उज्जन नागवंशी ,भावराव नागरवार, त्रिलोक,होमू , संजू,राजकुमार,आदि लोगों द्वारा लंबे समय से ग्राम में ही खुलेआम महुआ शराब बनाने के साथ ही इस महुआ शराब को बेचते है,जिसे ग्राम के कई युवा,बुजुर्गों के साथ ही बच्चे भी इस शराब को पीने के आदि होते जा रहे है,जिससे यह कई बीमारियों से ग्रसित भी रहे है साथ शराब पीने के बाद ग्राम में आपस में वाद विवाद मारपीट तथा घरेलू हिंसाओं की घटनाए बढने लगी है। ग्रामीण महिलाओं ने इस सबसे ग्रामीणों को सुरक्षित रखने हेतू ग्राम में खुलेआम बनाई तथा बेची जा रहीं इस महुआ शराब पर सख्ती से पाबंदी लगाते हुए इस शराब को बनाने वालों पर सख्ती से कार्यवाही करने की मांग की है।

## गांव-गांव पहुंच रहा मानसिक स्वास्थ्य अभियान, निशुल्क उपचार से जुड़ रहे ग्रामीण मरीज

**नवभारत न्यूज**

**सौंसर** -सौंसर विकासखंड के ग्रामों में ग्रामीण आदिवासी समाज विकास संस्थान द्वारा संचालित सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीण एवं आदिवासी समुदाय को मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना, मानसिक रोगों से जुड़े मिथकों और अंधविश्वास को दूर करना तथा पीड़ित व्यक्तियों को समय पर उचित उपचार से जोड़ना है।

संस्था की टीम ने बोरगांव, खापरखेड़ा, पंधराखेडी, सावंगी, भुम्मा, रझाड़ी बोरगांव एवं पारडसिंगा सहित विभिन्न ग्रामों में मनो-शिक्षा सत्र आयोजित कर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से

पीड़ित मरीजों के देखभालकर्ताओं और ग्रामीणों को मानसिक रोगों के लक्षण, कारण और उपचार की वैज्ञानिक जानकारी दी गई। बताया गया कि अवसाद, चिंता, तनाव, अनिद्रा, व्यवहार में परिवर्तन, नशे की लत या असामान्य भय जैसी समस्याएं मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी हो सकती हैं। प्राय: ग्रामीण क्षेत्रों में इन समस्याओं को झाड़-फूंक या अंधविश्वास से जोड़ दिया जाता है, जिससे रोगी को समय पर उपचार नहीं मिल पाता। जबकि वास्तविकता यह है कि मानसिक रोग भी अन्य शारीरिक रोगों की तरह ही चिकित्सकीय परामर्श और दवाओं से नियंत्रित एवं पूर्णत: ठीक हो सकते हैं।

कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश भी दिया जा रहा है कि मानसिक स्वास्थ्य केवल रोग की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक संतुलन की स्थिति है। यदि व्यक्ति लगातार उदासी, चिड़चिड़ापन, भय, आत्मविश्वास में कमी या सामाजिक अलगाव महसूस करता है, तो उसे इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। सही समय पर मनोचिकित्सक से परामर्श लेने से रोग की गंभीरता को रोका जा सकता है और व्यक्ति सामान्य जीवन की ओर लौट सकता है।

जामसांवली मंदिर परिसर में संचालित मानसिक स्वास्थ्य परामर्श केंद्र इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यहां प्रत्येक माह के प्रथम और तृतीय मंगलवार को मनोचिकित्सीय ओपीडी का आयोजन किया जाता है, जिसमें मनोचिकित्सक द्वारा रोगियों को नि:शुल्क परामर्श और उपचार प्रदान किया जाता है। इस पहल से अब तक कई मरीजों को लाभ मिला है और वे धीरे-धीरे सामान्य जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

संस्था के निदेशक विजय धवले ने कहा कि समाज में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर एक अनावश्यक डर और कलंक जुड़ा हुआ है। लोग मानसिक रोग को कमजोरी या सामाजिक बदनामी से जोड़ते हैं, जबकि यह एक सामान्य चिकित्सकीय स्थिति है। उन्होंने कहा कि संस्था का प्रयास है कि मानसिक स्वास्थ्य को लेकर सकारात्मक वातावरण बनाया जाए, ताकि लोग बिना किसी संकोच के विशेषज्ञों से सलाह लें और उपचार प्राप्त करें।

ग्रामीण आदिवासी समाज विकास संस्थान द्वारा सौंसर क्षेत्र में चलाया जा रहा यह अभियान न केवल मानसिक रोगियों को नि:शुल्क उपचार से जोड़ रहा है, बल्कि समाज में जागरूकता, संवेदनशीलता और वैज्ञानिक सोच को भी बढ़ावा दे रहा है। यह पहल ग्रामीण क्षेत्रों में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित करने की दिशा में एक सशक्त और सराहनीय कदम साबित हो रही है।